वैष्णव परम्परा

महन्त हरिशंकरदास वेदान्ती
अध्यक्ष
श्री रघुनाथ मंदिर ट्रस्ट, ढेहर का बालाजी, जयपुर

धर्म के विषय में वेद, स्मृति इतिहास, पुराण आदि सभी भारतीय ग्रन्थों में बहुत चर्चायें मिलती हैं। मानव से रक्षित धर्म मानव का रक्षण करता है और मानव से अरक्षित धर्म मानव का नाश कर देता है ऐसा मनुजी का कथन है। समस्त भारतीय आचार व्यवहार का आधार धर्म ही है। जिसके आचरण से सायुज्यमुक्ति की प्राप्ति हो वह धर्म है। ऐसा दर्शन शास्त्रियों का मत है। भारतीय जनता के व्यवहारों में इसे करना चाहिये, इसे नहीं करना चाहिये ऐसा करने से धर्म होता है ऐसा करने से अधर्म होता है इस प्रकार के मानव समूहों के दैनिक व्यवहार के मूल में धर्म ही अचल नींव के रूप में देखने में आता है। सम्प्रति भारत या विश्व में अनेकों प्रकार के मानव वर्ग है उन सभी का आचार व्यवहार एवं दैनिक कर्म धर्म के ऊपर ही आधारित है अतः भारतीय शास्त्रों में धर्म के विषय में 'बहुत गहराई से चर्चा की गयी वह अनेक शास्त्रों में अनेक प्रकार से उपलब्ध हो रहा है। अभी हमारा लक्ष्य श्रीवैष्णव धर्म के विषय में संक्षिप्त चर्चा करने का है, श्री वैष्णवाचार्यों ने वेद एवं वेद के अविरुद्ध शास्त्रों के आधार पर धर्म की गहन चर्चा की है, श्री वैष्णवाचार्यों के समय-समय का अवतार धर्म विरुद्ध आचरणों का निराकरण कर वेद शास्त्रादि सम्मत धर्म का प्रचार-प्रसार कर मानव समाज को सर्वेश्वर श्रीरामशरणाभिमुखी करना रहा है। उसी धर्म व्यवस्था के संस्थापन हेतु अवतरित आचार्योंमें से सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के साक्षात् अवतार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी हुए हैं उन्हीं आचार्य श्री से मानव समूहों के कल्याण हेतु विशद रूप से प्रचारित अन्य सभी धर्मों की अपेक्षा मुख्य रूप से परिगणित श्रीवैष्णव धर्म है। उन्हीं श्री आनन्द भाष्यकारजी के उत्तरवर्ती धर्मसंरक्षक एवं धर्म प्रचारकाचार्य श्रीखीजीदेवाचार्य जी हुए हैं उन्हीं के उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा में वर्तमान आचार्यपीठाधीश श्रीखोजीदेवाचार्य पीठाधीश्वर श्रीनारायणाचार्यजी वर्तमान में है। आपके धर्म विषयक परमार्थपरायणता धर्म पालन में चुस्तपनाओं को पिछले कई वर्षों से सुनते आया था उनके साक्षात् सत्संग का लाभ का सुअवसर प्राप्त नहीं हो पाया था 'विनु सतसंग विवेकन होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई इस विश्वकवि श्रीतुलसीदासजी के उक्ति के अनुसार सर्वेश्वर श्रीसीतारामजी की असीम कृपा के परिणामस्वरूप 1998 से श्रीब्रह्मपीठाधीश्वरजी के सत्संग का लाभ प्राप्त होता आ रहा है। श्रीकाठियापरिवाराचार्यजी अपनी दैनिक क्रियाओं से निपटने के बाद मार्मिक सत्संग में श्रोताओं के भावों के अनुसार

उपदेशामृत का परिवेषण करते हैं। श्रीखोजीदेवाचार्य पीठाधीश्वर सत्संगति के प्रवाह में अन्य धर्मों की अपेक्षा अहिंसा धर्म को अधिक महत्व देते हैं। वेदवाणी भी किसी भूतों की हिंसा न करे, यही उपदेश देती है। पुराणादि शास्त्रों में भी ऐसा ही उपदेश प्राप्त होता है-

अहिंसा के समान दान नहीं, अहिंसा के समान तप नहीं, पुण्य कर्म को बढ़ाने वाला भूषणरूप अहिंसा ही है एवं अहिंसा के समान कोई तीर्थ भी नहीं जैसे टेढी मेढी होकर चलने वाली अनेक नदियाँ अन्तिम में शान्त व सीधे समुद्र में प्रवेश कर जाती हैं ठीक उसी प्रकार हिंसा से रहित सज्जन श्रीवैष्णवों में सभी धर्म आश्रय प्राप्त कर लेते हैं। प्राणी हिंसा में मानव सभी का घात करने वाला होता है वह लकड़ी में स्थित अग्नि के समान दूसरों का नाश करके स्वयं भी नाश हो जाता है अतः मानव को हिंसा सभी प्रकार से छोड़ देना चाहिये। जो अधोगति का कारण है। कन्द, मूल, फल एवं हविष्यान्न अर्थात् चावल गेहूँ, जौ, तिल आदि पवित्र पदार्थों से शरीर सम्बन्धी निर्वाह अच्छी प्रकार से होता है तो हिंसा सम्बन्धी पाप कर्मों में मानवों को लगना नहीं चाहिये। उन हविष्यान्न पदार्थों को भी अपने पाप कर्मों की निवृत्ति की कामना करने वाले श्री वैष्णवों को सर्वेश्वर श्री सीता रामजी को नियम के अनुसार समर्पण करके ही सेवन करना चाहिये। भगवान् को अनिवेदित अर्थात् भोग नहीं लगाये पदार्थ का सेवन पाप को बढ़ाने वाला होता है-

प्रभुप्रसाद पट भूषण धरहीं। तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं ॥

इस प्रकार का मानव का आदर्श होना चाहिये। इस प्रकार के उपदेशामृत श्रीकाठियापरिवाराचार्यजी से नियमित हुआ करते हैं। श्रीखोजीदेवपीठाचार्यजी भगवान् के अर्चावतार में गहरी निष्ठा रखते है उनसे संचालित त्रिवेणीधाम में स्थित अर्चाविग्रह की अति सुन्दर श्रृङ्गार सेवा, पूजा, राग, भोग की व्यवस्था है उसी प्रकार की व्यवस्था डाकोर में स्थित ब्रह्मपीठ की भी है।

'समर्प्य कर्णाणि शुभानि वैष्णवो रामाय भक्ष्यं च निवेद्य भक्षयेत् ॥'

इस जगदाचार्य भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजी की आज्ञा का शतप्रतिशत आपसे संचालित दोनों पीठों में होता है एवं नियत रूप से भगवान् की स्तुति हुआ ही करती है यह आदर्श वर्तमान पीठाधीश्वरजी के स्वतः आचरित क्रियाकलापों से ओत-प्रोत है जो श्रीवैष्णव धर्म का मूल है।

आनन्द भाष्यक तरिमानन्दपथदर्शक म् । आनन्दनिलयं वन्दे (श्री) रामानन्दं जगद्गुरुम् ॥ कलौ खलु भविष्यन्ति चत्वारः साम्प्रदायिकाः श्रीब्रह्मरुद्रसनकाः वैष्णवाः क्षिति पावनाः ॥

श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास, संहिता एवं तन्त्रादि ग्रन्थों में आत्म कल्याणार्थ "रुचीनां वैचित्र्यात्" के आधार पर वैष्णव जगत् में भगवान श्री सीताराम एवं वैष्णवीय उपासना के अनेकों श्रोत मिलते हैं जिसके सिध्यर्थ तत् तत् इष्ट देवता की मंत्र परम्परा प्राप्त होती है। सनातन परम्परा से चली आ रही उपासना पद्धति को सम्प्रदाय कहते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त पद्मपुराण के वचनों के अनुसार चारों सम्प्रदाय के अनुयायी भगवत्भक्ति का प्रचार कर कलियुग को पवित्र बनाने वाले होंगे ऐसा कहा गया है।

सम्प्रदाय:-

सम्यक् प्रकृष्ट दानं च मंत्रादेः श्रुतिमूलकम् इत्यर्थः सम्प्रदायेति शब्दस्योक्तः महर्षिभिः ।

जो वैदिक मन्त्रों को विधान (सरहस्य) परम्परा से उपदेश करे उसको सम्प्रदाय कहते हैं। जो कि चार हैं। श्री, ब्रह्म, रूद्र एवं सनकादि जिनके कलियुग में प्रवर्धकाचार्य भी चार हैं।

(श्री) रामानन्दो निम्बादित्यो विष्णु स्वामी श्री माधवः । चत्वारो भगवद्भक्ता जगती धर्म स्थापकः एतेषामनुयायिनी द्विपंचाशद् विजज्ञिरे ॥

चतुः सम्प्रदाय में श्री सम्प्रदायाचार्य जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जी हैं, सनकादि सम्प्रदाय के श्री निम्बार्काचार्य, रूद्र सम्प्रदाय के श्री विष्णु स्वामी एवं ब्रह्म सम्प्रदाय के श्री माध्वाचार्य हुए। इन्हीं चतुः सम्प्रदाय के वैष्णवों के संगठनमहाकुम्भ के अवसर पर वैष्णवीय अनी, अखाड़ों के साथ शाही स्नान करते हैं। श्री सम्प्रदाय के अनुयायी श्री रामानुजाचार्य को भी आचार्य माना गया है किन्तु उनकी गणना चतुः सम्प्रदाय के वैष्णवों में कहीं पर नहीं है। अस्तु श्री सम्प्रदाय में भले ही श्री लक्ष्मीनारायण की उपासना के प्रवर्तकाचार्य के रूप में श्री रामानुजाचार्य को श्री सम्प्रदायाचार्यत्वेन स्वीकार किया जाता है किन्तु श्री वैष्णव चतुः सम्प्रदाय संगठन के अन्तर्गत अनादि वैदिक श्री सम्प्रदायाचार्य के रूप में प्रस्थानत्रयी आनन्द भाष्यकार हिन्दू धर्मोद्धारक यति पति चक्र चूड़ामणि जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य को ही स्वीकार किया गया है। जिन इतिहासकारों ने आचार्य श्री को रामानुजानुवर्ती लिखा है वास्तव में उन्होंने किम्वदन्तियों एवं विकृत परम्पराओं को ही प्रामाणिक मानकर ऐसा लिखा है जिनका खण्डन श्री स्वामी भगवदाचार्य, श्री स्वामी रघुवराचार्य प्रभृति महापुरुषों ने प्रबल प्रमाणों के आधार पर किया है। जिनका उदाहरण के रूप में डॉ. रामेश्वर दास श्री वैष्णव ने अपने शोध ग्रन्थ "मध्य कालीन हिन्दी भक्ति साहित्य को जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्द की देन" में विस्तार से सम्पादित एवं प्रतिष्ठित किया है। वास्तविक स्थिति यह है कि श्रीराम मंत्रराज की एवं श्री रामोपासना की सुदृढ़ परम्परा रही है जो अनादि वैदिक काल से अविछिन्न रूप से चली आ रही है। जिसके सहस्त्रों प्रमाण वेद, पुराण, इतिहास, संहिता एवं तन्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं।

उदाहरणार्थ श्री मैथिली महोपनिषद् में श्री सम्प्रदाय की आनुपूर्वी परम्परा श्री शुकाचार्य पर्यन्त देखने को मिलती है, जो कि निम्न प्रकार से है:- इममेव मनुं पूर्व साकेत पतिर्माभिवोचत् अहं हनुमते मम प्रियायप्रियतराय स वेद वेदिने ब्रह्मण स वशिष्ठाय स पराशराय स व्यासाय स शुकाय इत्येषोपनिषद्। इत्येषा ब्रह्मविद्या। इसी प्रकार मंत्रराज की परम्परा श्री अगस्त संहिता, श्री बाल्मिक संहिता, श्री वशिष्ठ संहिता एवं गीता के आनन्द भाष्यादि ग्रन्थों में आनुपूर्वी उपलब्ध है। इसी प्रकार आचार्य चरणों के चञ्चरीक परवर्ती आचार्यों के द्वारा भी मंत्र परम्परा के आचार्यों का स्मरण किया गया है। इससे सनत्कुमार आदि संहिताओं के वचनों के अनुसार सर्व लोकोपकारी द्विभुज श्री सीताराम की उपासना अनादिकाल से चली आ रही है जिसका प्रचुर मात्रा में वर्णन वेद, पुराण, इतिहास एवं संहितादि ग्रन्थों में है। उपर्युक्त शास्त्रीय प्रमाणों का संग्रह सम्प्रदायनिष्ठ विद्वान् आचार्यगणों के द्वारा किया गया है। अतः जिन महानुभावों को इस विषय में जानने की इच्छा हो उन्हें श्री सीताराम नाम प्रताप प्रकाश, संग्रहीता- श्री युगलानन्य शरणजी महाराज, इसी प्रकार श्री रामचरणदास जी (करुणासिन्धु जी) द्वारा संग्रहीत श्री राम नवरत्न सार संग्रह, महात्मा ब्रह्मदास जी द्वारा प्रणीत श्री रामपरत्वम्, श्री सरयूदास कृत श्री वैष्णव कुल भूषण सारसंग्रह, जगद्गुरु श्री रामेश्वरानन्दाचार्य कृत श्री रामपरत्वम् आदि ग्रन्थों को देखकर एवं गहन अध्ययन कर अपनी जिज्ञासा शान्त करनी चाहिए, उदाहरणार्थ कुछ उद्धरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

सचन्त यदुषसः सर्वेय चित्रामस्य केतवो राम विन्दन्। आयनक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो न किरानुवेद

(ऋ.)

उपर्युक्त वैदिक मंत्र से श्री राम षड्क्षर मंत्र को उद्धृत कर उसकी महिमा का वर्णन किया गया है जिसकी पद्यसः जानकारी हेतु श्री बोधायन वृत्तिकार ज.गु. श्री पुरुषोत्तमाचार्य द्वारा सम्पादित "वेद रहस्य" के ज.गु. श्री राघवानन्दाचार्य कृत मार्तण्ड भाष्य को देखें। उपर्युक्त ग्रन्थ श्री रामभक्ति की वैदिकता का प्रतिपादन करता है।

श्री रामतापनीय उपनिषद् में "रमंते योगिनोनंते सत्यानन्दे चिदात्मानि। इति राम पदे नासौ परब्रह्माभिधीयते"।

मुक्तिकोपनिषद्:- हरि ॐ अयोध्या नगरे रम्ये रत्न मण्डप मध्यगे सीता भरत सौमित्री शत्रुघ्नाद्यैः समन्वितम् वशिष्ठाद्यैः शुकादिभिः अन्ये र्भागवतैश्चापि स्तूयमानमहर्निशम्। उपर्युक्त प्रमाण से राम भक्ति की प्राचीनता स्पष्ट दिखाई देती है।

श्री हनुमन्नाटक:- इदं शरीरं शत संधि जर्जरं पतत्यवश्यं परिणाम दुर्वहम्। किमौषधं पृच्छसि मूढ़ दुर्मते निरामयं राम रसायनं पिव। अरे मूढ सैकड़ों संधियों से जर्जर परिणाम वशात् अवश्य विनाशशील यह शरीर है इसके लिए क्या औषधि पूछता है समस्त रोगों को हरने वाले राम रसायन का पान कर।

वाराह पुराण:- श्री पार्वतीजी को शंकर जी कह रहे हैं:-

दैवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेछो जराजर्जरी, हा रामेण हतोस्मि भूमि पतिती जल्पं तनुं त्यक्तवान्। तीर्णो गोष्पद्वद् भवार्णव महोनाम्नः प्रभावात्पुन, किंचित्रं यदि राम नाम रसिकास्ते यान्ति रामास्पदम्।

पद्म पुराण:- नाम वरानने॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं राम ये ये प्रयोगास्तंत्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते फलं। तत्सर्वं सिध्यतिक्षिप्रं रामनाम्नैव कीर्तनात्॥

नृसिंह पुराण:- प्रहलाद जी की उक्ति सर्व विदित

राम नाम जपतां कुतो भयं सर्वताप शमनैक भेषजं पश्यतात मम गात्र सन्निधौ पावकोपि सलिलायते धुना।

ब्रह्मयामल तन्त्र में श्री ब्रह्माजी द्वारा नारद जी को उपदेश:-

राम नाम सदानन्दो राम नाम सदा गतिः।
राम नाम सदा तुष्टी राम नाम स्वरूपकः॥
राम नाम परो वेदो राम नाम सदा शुचिः।
राम नाम परो योगो राम नाम परी ध्वनिः॥
राम नाम परं बीजं राम नाम परं जगत्।
राम नाम परो मंत्री राम नाम परा क्रिया॥
राम नाम परो यज्ञो राम नाम परी जपः।
राम नाम परं सारं रामो लक्ष्मी समावृतः॥

काशी खण्डे:- पेयं पेयं श्रवण पुटकै राम नामाभिरामं, ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्म रूपम्। जल्पन् जल्पन् प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले। वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोपि काशी निवासी॥

सनत्कुमार संहिता में व्यास जी ने युधिष्ठर जी को सम्बोधित किया:-

श्री रामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेद विदो विदुः।
-भुक्ति मुक्तिञ्चविन्दते

हिरण्यगर्भ संहिता में अगस्तजी ने सुतीक्ष्ण जी को कहा:-

अभिरामेतियन्नाम कीर्तितं विवशैश्च यैः।
तेपि ध्वस्ताखिलाघौघायांति विष्णुं परं पदं॥

महा शंभु संहिता में श्री जानकीजी ने श्री रामजी को सम्बोधित किया-

रामेति नाममात्रस्य प्रभावमति दुर्गमम् मृगर्यान्त तु यद्वेद्वाः कुतो मन्त्रस्य ते प्रभो।

श्री मन्महारामायणे शिव वाक्यं पार्वतीं प्रतिः-

अंशाशै राम नाम्नश्च बयः सिद्धा भवंतिहि।
वीजमोंकार, सोहं च सूत्रमुक्तमितिश्रुतिः॥

परमेश्वर नामानि संत्यनेकानि पार्वति।
परन्तु राम नामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम्॥

रामस्यैव रमुक्रीड़ा नाम्नी नान्यस्य जायते।
जीवीत एव रामस्य स्मरणेन गतिं वृजेत॥

॥ वृहत् मनुस्मृतिः -

सप्त कोटि महामंत्राश्चित्त विभ्रम कारकाः। एक एव परी मंत्री राम इत्यक्षरद्वयम्॥

श्रुति सिद्धान्त भी यही है कि:-

यश्चाण्डालोऽपि रामेति वाचं तेन सह संवसेत् तेन सह संवदेत् तेन सह सभुज्जीयात्। वदेत्

श्रीरामचरित मानस, श्री मद्भागवत् अध्यात्म रामायण आदि की तो बात ही क्या वहाँ तो स्थान- स्थान पर राम नाम की महिमा गाई गई है। श्रीरामजी के अवतारी होने में भी बहुत प्रमाण प्राप्त होते हैं जिनमें यजुर्वेदीय सुदर्शन संहिता के वचनों को उद्धृत किया जाता है:-

मत्स्यश्च रामहृदयं तथा गुरु जनार्दनः कूर्मश्चाधार शक्तिश्च वाराहो भुजयोर्बलं। नरसिंहो महाकोपो वामन कटि मेखला। भार्गवो जंघयो जातो बलरामश्च पृष्ठतः। बौद्धश्च करुणा साक्षात् कल्की चित्तस्य हर्षतः। कृष्ण श्रृंगार रूपश्च वृन्दावन विभूषण। एतांश्चाशं कला चैव रामस्तु भगवान स्वयम्॥

सामवेद की उपब्राह्मण स्वरूप भरद्वाज संहिता में वर्णन है कि अवतारा बहवः सन्ति कलाश्चांश विभूतयः। राम एव परं ब्रह्म सच्चिदानन्द मव्ययम्। सर्वेषामवताराणामवतारी रघूत्तमः। सरिता सर्व मध्येषु सरयू पावनी यथा॥

इस प्रकार रामोपासकों के लिए अनेकानेक प्रमाण श्री हनुमत् संहिता, सनक सनातन संहिता, अगस्त संहिता सदाशिव संहिता, महासुन्दरी तन्त्र, महाशंभु संहिता, सनत्कुमार संहिता एवं ब्रह्मसंहिता में श्री रामोपासना की महिमा श्री रामोपासक अवतारों एवं ऋषि महर्षियों के द्वारा अनादिकाल से गाई एवं आचरण में ली जा रही है जो सभी प्रकार से मंगलकारी है। उसी को जब-जब होयधर्म की हानी, बाढ़हिं असुरअधम अभिमानी। तब- तब प्रभु धरि मनुज शरीरा। हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा। की उक्ति को चरितार्थ करते हुए शबरी, गिद्ध, निषाद, वानर आदि सामाजिक दृष्टि से हेय लोगों को गले से लगाने वाले अवतारी रघूत्तम भगवान् श्री रामचन्द्र जी ने सामाजिक आंतरिक बुराइयों एवं यवनों के दुष्कृत्यों से त्राहि-त्राहि कर रही हिन्दू जनता को पुनः पूर्ववत् गले से लगाने के लिए संहिता वचन "रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले" के अनुसार हमारे परमाराध्य भगवान् श्री राम ही इस धराधाम पर सम्वत् 1356 में त्रिवेणी संगम पर बसे प्रयाग राज में श्री पुण्यसदन एवं माता श्री सुशीलाजी के घर माघ कृष्ण सप्तमी को अवतरित हो श्री काशी पञ्चगंगा घाट निवासी दुर्वादध्वान्त मार्त्तण्ड श्री सम्प्रदायाचार्य श्री वशिष्ठावतार श्री राघवानन्दाचार्य से विरक्त दीक्षा ग्रहण कर परम्परा से प्राप्त श्री रामषडक्षर मन्त्रराज की दीक्षा द्वारा श्री अनन्तानन्द प्रभृति को जहाँ गले लगाया वहीं कबीर, रविदास, सेन, धन्ना आदि को गले लगा कर एवं अपनी शंख ध्वनि से दुर्जन यवनों को रास्ते पर लाकर डगमगाती हुई हिन्दू धर्म की नौका का उद्धार किया। इसीलिए आपको हिन्दू धर्मोद्धार जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्य के रूप में इतिहास साथ जनता आज भी स्मरण कर रही है। जिस प्रकार श्रीरामचन्द्र प्रभु का उदार चरित्र विस्तृत रूप में पाया जाता है उसी प्रकार श्रीरामावतार जगद्गुरु का चरित्र भी बहुत उदार एवं विस्तृत है। आपका चरित्र सर्वलोकोपकारी होने के कारण बहुत से कविजन एवं लेखकों की लेखनी का विषय बना। जैसे, संस्कृत में श्री रामानन्द दिग्विज-महाकाव्य ज.गु. श्री स्वामी भगवदाचार्य प्रसादित इसी प्रकार गोस्वामी श्री हरिकृष्ण शास्त्री द्वारा रचित भारतीय संस्कृत वाड़मय में "श्री आचार्य विजय नामकमहाकाव्य, हिन्दी में स्वामी श्री जयरामदेव कृत रामानन्दाचार्य चरितम्, अब से लगभग 600 वर्ष पूर्व आचार्य श्री के शिष्य चेतनदास जी द्वारा पैशाची भाषा में लिखा गया "प्रसंग परिजात" श्री मनमोहनाचार्य द्वारा आचार्य जीवन वृत्त, श्री स्वामी अभिरामदास जी की शिष्या द्वारा खोज पूर्ण विवेचन "काशीमार्तण्ड", "सद्गुरु सुवश मालिका' ले. सन्तशिशोमणिदास इत्यादि ग्रन्थ स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हैं।

वैष्णव धर्म की यह परम्परा विभिन्न शाखाओं में परिणीत होकर चल रही है। मूलत: समस्त सनातन धर्मावलम्बी वैष्णव धर्म की परम्परा के पोषक है।